शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -1
November
2024

उत्तराखण्ड में स्थानीय सिनेमा की दशा का विवेचनात्मक अध्ययन

अभिनव पांडे
एम.ए मॉस कम्युनिकेशन

डॉ. आशा बाला
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार
श्री गुरू राम राय विष्वविद्यालय, देहरादून

सारांश

आज सिनेमा एक ऐसा सशक्त माध्यम बन चुका है जिसने संचार के क्षेत्र में अपनी एक विशेष उपस्थिति दर्ज करायी है। आज सिनेमा लोगों के मध्य सर्वाधिक लोकप्रिय होने के कारण सर्वाधिक शक्तिशाली संचार माध्यम बन चुका है। सिनेमा के बारे में प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक सत्यजीत रे का कथन है "कि सिनेमा एक चित्र है, सिनेमा एक शब्द है, सिनेमा आन्दोलन है, सिनेमा नाटक है, सिनेमा एक कहानी है, सिनेमा हजारों अभिव्यक्ति पूर्ण श्रव्य एवं दृष्य आख्यान है।" सिनेमा किसी क्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक उत्तराखण्ड अनुक्रम मे प्रक्षेपित छाया चित्रों की एक लम्बी श्रृंखला द्वारा विचारों के सम्प्रेषण का एक माध्यम है। भारतीय सांस्कृतिक सन्दर्भ में सिनेमा सर्वाधिक लोकप्रिय और सबसे अधिक शक्तिशाली संचार माध्यम बनकर उभरा है।

भारत में बम्बई के 'वाटसन' होटल में 7 जुलाई सन् 1896 को ल्युमीए बंधुओं के सहयोग से पहली बार फिल्म का प्रदर्शन किया गया। 3 मई 1913 को कोरेनेषन सिनेमा में रिलीज हुई 'दादा साहब फाल्के' की फिल्म 'राजा हरिशचन्द्र' को पहली भारतीय फिल्म का दर्जा प्राप्त हुआ, और भारतीय सिनेमा की शुरूआत हुई। आज भारतीय सिनेमा ने लोकप्रियता में सबको पछाड कर रख़ दिया है, और उसने अपने 100 गौरवशाली साल पूरे होने का जश्न मना रहा है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -1
November
2024

उत्तराखण्ड राज्य 9 नवम्बर 2000 को भारत के 27 वाँ राज्य के रूप गठित हुआ। भले ही भारतीय सिनेमा आज अपनी स्वर्ण जयंति मना रहा हो, परन्तु उत्तराखण्ड और इसके सिनेमा दोनों का इतिहास कुछ ज्यादा पुराना नहीं है। 4 मई 1983 को दिल्ली के मावलंकर सिनेमा हॉल में 'पाराशर गौड़' द्वारा निर्मित आंचलिक फिल्मस् तले 'जग्वाल' को प्रदर्शित कर उत्तराखण्ड सिनेमा की शुरूआत हुई।

उद्देश्य

1- उत्तराखण्ड में स्थानीय सिनेमा की मौजूदा स्थिति क्या है?

2- उत्तराखण्ड का स्थानीय सिनेमा किससे प्रेरित है?

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध विषय के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोध हेतु विश्लेषणात्मक शोध विधि को प्रयोग में लाया गया है। विषय हेतु तथ्य एकत्रित करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण

1983 का साल उत्तराखण्ड सिनेमा इतिहास का एक यादगार वर्ष के रूप में आया। 4 मई 1983 को सर्वप्रथम 'पाराशर गौड' द्वारा निर्मित 'जग्वाल' को दिल्ली के 'मावलंकर' सिनेमा हॉल में प्रदर्शित किया गया। कभी सुख कभी दुख, घरजवैं, कौथिक, उदंकार, प्यारू रूमाल, समलौण, फ्योंली, बंटवारू, जीतु बग्डवाल आदि फिल्में प्रदर्शित हुई। 1986 में आई फिल्म 'घरजवैं' ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इसे आज भी गढवाल की सबसे सफल फिल्मों में गिना जाता है। विष्वेसर दत्त नौटियाल और तरूण तारण द्वारा निर्देशित 'घरजवैं' को दिल्ली के 'संगम सिनेमाहॉल' मे प्रदर्षित किया गया। यह 35 उउ बनी पहली गढवाली फिल्म थी। दिल्ली के सिनेमा हॉल में यह फिल्म 29 सप्ताह तक चली थी। यह अब तक का सबसे बड़ा कीर्तिमान है। इस फिल्म में मुख्य भुमिका में अमित भट्ट, नारायण भण्डारी, हिमानी, पायल, कुसुम नेगी थे। 1990-2000 के बीच मे आई फिल्मे चक्रचाल, पियोली,

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -2
Issue -1
November
2024

ब्वारी हो तो इन, बेटी, बंटवारू, सत् मंगलिया आदि फिल्मे आयी जो की परदे पर ज्यादा सफल साबित नही हो पाई। सिनेमा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा उत्तराखण्ड की भाषा, संस्कृति को जन-जन तक पंहुचाया जा सकता है, साथ ही साथ राज्य में पर्यटन को बढावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। यदि पूरे भारत की बात की जाए तो अनेक राज्य जैसे- पंजाब, बिहार, महाराष्ट्र के पास अपनी फिल्म इंडस्ट्री है जिसके द्वारा यहाँ का सिनेमा अपपी संस्कृति से देश भर को अवगत करवा रहा है और लोगों द्वारा इनके प्रति काफी उत्सुक्ता देखने को मिलती है। परन्तु उत्तराखण्ड की सरकार द्वारा सिनेमा के प्रति बेरूखा सा बर्ताव देखना को मिलता है और वह इस ओर ध्यान भी नही देना चाहती है।

उत्तराखण्ड में सिनेमा की रफ्तार काफी धीमि रही है जिसका मुख्य कारण यहाँ सिनेमा का उद्योग के रूप में सामने ना आ पाना भी है। क्योंकि आज तक यहाँ के सिनेमा को उद्योग के रूप मे नही देखा गया है और जब इसे एक उद्योग के रूप मे ना देखा जाए तब तक इसमे रफ्तार आना मुष्किल है। क्योंकि लाभ ना होने के कारण फिल्म निर्माता स्थानीय फिल्म बनाने से जी चुराते हुए नजर आते है। अधिकतम निर्माता भाषा व संस्कृति के भक्त बनकर ही गढ़वाली-कुमाऊँनी फिल्मों का निर्माण किया करतें हैं। अतः यदि सरकार द्वारा इसे उद्योग घोषित किया जाए तो इसे एक रफ्तार प्राप्त हो सकेगी।

उपसंहार

जहाँ एक ओर भारतीय सिनेमा अपने 100 स्वर्णिम वर्श पूरे कर चुका है, वंही दूसरी ओर उत्तराखण्ड में स्थानीय सिनेमा का सफर कुछ ज्यादा लम्बा नही हुआ है। आज उत्तराखण्ड का स्थानीय सिनेमा अपनी रजत जंयती पूर्ण कर चुका है, यानि वह अपने सफर के 25 वर्ष तय कर चुका है। परन्तु आज भी आज भी इसके बढ़ते कदम ऊँचाई के रास्ते में जाते हुए नही दिखाई पड़ते है। यह आज भी अपने अस्तितव के लिए जुझता हुआ नजर आ रहा है। 1983 में पाराशर गौर के द्वारा उत्तराखण्ड मे सिनेमा की नींव रखी गयी थी, परन्तु इस नींव वह इमारत खड़ी नही हो पाई जिसकी कल्पना कभी उन्होने कि थी। अब तक लगभग 30 से ज्यादा फिचर फिल्म तथा कई विडियो फिल्म प्रदर्शित हो चुकी हैं। संख्या की दृश्टि से

उत्तराखण्डी भाषाई फिल्में कम बनी है, किन्तु जो भी बनी हैं वे इस बात की दयोतक हैं कि उत्तराखण्डीयों में अपनी भाषा का जज्बा हैं। भाषा प्रेम कहीं ना कहीं देखने को जरूर मिलता है। लाभ ना होने के आसार होते हुए भी निर्माता फिल्में बना रहे हैं। गढ़वाली-कुमाऊँनी भाषाओं के अधिकांश कलाकार जज्बे के रूप मे ही फिल्मों से जुड़े हुए है ना की धन लाभ हेतु। आज उत्तराखण्ड को बने 13 साल से अधिक हो चुके हैं परन्तु आज भी राज्य का ना कोई अपना निजि चैनल है और ना ही फिल्म इंडस्ट्री प्राप्त हो पाई है।

संदर्भ सूची

पुस्तकें

1. मनीष गौड, उत्तराखण्ड एक दृश्टि में, रवि पब्लिकेशन
2. रेनू विश्नोई, उत्तराखण्ड सामान्य ज्ञान (तनुश्री), हिमाद्री पब्लिकेशन
3. प्रसून जोशी, भारतीय सिनेमा की अन्नत यात्रा, विंसर पब्लिकेशन
4. ब्रामातमाज अजय, सिनेमा की सोच, विंसर पब्लिकेशन

इंटरनेट वेबसाइट्स

1. www.merapahadforum.com
2. www.ghuguti.com
3. cinema.prayaga.org
4. www.hesalu.com

समाचार पत्र

1. अमर उजाला
2. हिन्दुस्तान
3. दैनिक जागरण